जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्ध्य च

जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़

शेखावाटी सन्मार्ग

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

सतीनां वै सतांवैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्ग मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 29 | लक्ष्मणगढ़ 16 फरवरी 2022 | मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/- रु.वार्षिक

भारत रत्न "स्वर कोकिला" लता मंगेशकर को भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वर कोकिला लता मंगेशकर की जादुई आवाज जिसका भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व ईश्वर का वरदान मानता था | अब वह जादुई आवाज शान्त हो गई | विख्यात गायिका लता जी का जन्म दिनांक 28 सितम्बर 1929 में इन्दौर में हुआ |

वे भारत की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका थी, जिनका छः दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा रहा | हालाँकि लता जी ने लगभग तीस से ज्यादा भाषाओं में फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गाने गाये हैं लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्व गायिका के रूप में रही है | अपनी बहन आशा भोंसले के साथ लता जी का फ़िल्मी गायन में सबसे बड़ा योगदान रहा है|

लता जी की जादुई आवाज के भारतीय उपमहाद्वीप के साथ – साथ पूरी दुनिया में दीवाने हैं | टाईम पत्रिका ने उन्हें भारतीय पार्श्व गायन की अपरिहार्य और एकछत्र सम्राज्ञी स्वीकार किया है | लता दीदी को भारत सरकार ने सन् 2001 में **"भारत रत्न"** से सम्मानित किया |

एक सच्ची देशभक्त, एक महान गायिका और सद्भावना की मिसाल ऐसी शख्स हमारे बीच नहीं है, जिसकी जीवनचर्या राष्ट्र के विकास के ताने – बाने को हमेशा मजबूत करती रही | जिसके जीवन का एक - एक पल देश को समर्पित रहा | आइए हम संकल्प लें कि उनकी बताई राह पर चलकर देश को तरक्की की नई ऊँचाइयों तक पहुंचाएंगे |

यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी |

- **लता जी का जन्म**

जन्म इंदौर, मध्यप्रदेश में 28 सितम्बर, 1929 को हुआ था। लता मंगेशकर का नाम विश्व के सबसे जाने माने लोगों में आता है। लता मंगेशकर के पिता दीनानाथ मंगेशकर एक कुशल रंगमंचीय गायक थे। दीनानाथ जी ने लता को तब से संगीत सिखाना शुरू किया, जब वे पाँच साल की थी। उनके साथ उनकी बहनें आशा, ऊषा और मीना भी सीखा करतीं थीं। लता 'अमान अली ख़ान साहिब' और बाद में 'अमानत ख़ान' के साथ भी पढ़ीं।
लता मंगेशकर हमेशा से ही ईश्वर के द्वारा दी गई सुरीली आवाज़, जानदार अभिव्यक्ति व बात को बहुत जल्द समझ लेने वाली अविश्वसनीय क्षमता का उदाहरण रहीं हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनकी इस प्रतिभा को बहुत जल्द ही पहचान मिल गई थी। पाँच वर्ष की छोटी आयु में ही आपको पहली बार एक नाटक में अभिनय करने का अवसर मिला। शुरुआत अवश्य अभिनय से हुई किंतु आपकी दिलचस्पी तो संगीत में ही थी। लताजी का नाम पहले 'हेमा' था, लेकिन जन्म के पांच साल बाद माता-पिता ने नाम बदलकर 'लता' रख दिया था।

रोचक तथ्य

- उन्होंने अपना पहला गाना 12 वर्ष की उम्र में माइक के सामने गाया था |
- उन्होंने अपना पहला गाना मराठी फिल्म 'किती हसाल' (कितना हंसोगे?) (1942) में गाया था |
- लता मंगेशकर को सबसे बड़ा ब्रेक फिल्म महल से मिला | उनका गाया 'आयेगा आने वाला' सुपर हिट था |
- लता मंगेशकर ने 30 से अधिक भाषाओं में 30000 से अधिक गाने गाये |
- लता मंगेशकर ने 1980 के बाद से फिल्मों में गाना कम कर दिया और स्टेज शो पर अधिक ध्यान देने लगी |
- लता ही एकमात्र ऐसी जीवित शख्सियत थी | जिनके नाम से पुरस्कार दिए जाते हैं |
- लता मंगेशकर ने आनन्द घन बैनर तले फिल्मों का निर्माण भी किया है और संगीत भी दिया है |
- वे उपवास के दिन गाने नहीं गाती थी व हमेशा नंगे पाँव गाना गाती थी |

पुरस्कार

- फिल्म फेयर पुरस्कार (1958, 1962, 1965, 1969, 1993 और 1994)
- राष्ट्रीय पुरस्कार (1972, 1975 और 1990)
- महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार (1966 और 1967)
- 1969 - पद्म भूषण
- 1974 - दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का गिनीज़ बुक रिकॉर्ड
- 1989 - दादा साहब फाल्के पुरस्कार
- 1993 - फिल्म फेयर का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार
- 1996 - स्क्रीन का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
- 1997 - राजीव गांधी पुरस्कार
- 1999 - एन.टी.आर. पुरस्कार
- 1999 - पद्म विभूषण
- 1999 - ज़ी सिने का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
- 2000 - आई. आई. ए. एफ. का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
- 2001 - स्टारडस्ट का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
- 2001 - भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न"
- 2001 - नूरजहाँ पुरस्कार
- 2001 - महाराष्ट्र भूषण

लता मंगेशकर द्वारा गाया गया देश भक्ति गाने का किस्सा

लता जी ने हमेशा अपनी शर्तों पर ही गीतों को गाया। उनका मानना था कि रिकार्डिंग की पेमेण्ट के बाद भी जब तक वह रिकार्ड बिक रहा है। उसकी कमाई का एक छोटा सा हिस्सा गायक को भी आना चाहिए। जबकि हर प्रोड्यूसर इसके खिलाफ थे। जिस समय देश का मनोबल नीचे था तब देश को एक ऐसे ही जज्बे की तलाश थी जो कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से रण को एक कर सके और साथ ही आसमान में तिरंगे को लहराता देख कर गर्व महसूस कर सके। ऐसे में राष्ट्र कवि प्रदीप जी ने ये शब्द **"ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी, जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी"** इन शब्दों को लता जी ने अपनी आवाज दी थी जिससे यह गाना सदा सदा के लिए अमर हो गया। इस गीत को लता ने पहली बार **27 जनवरी, 1963** को दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में पं. श्री नेहरू जी उपस्थिति में गाया गया था, गाना सुनकर नेहरु जी की आँखों में भी आँसू आ गए थे।

पार्श्व गायिका के रूप में लता मंगेशकर की पहचान

पार्श्वगायिका के रूप में लता जी को पहचान दिलाने वाले इनके गुरू **उस्ताद गुलाम हैदर** थे। गुलाम हैदर जी ने इनको संगीत के क्षेत्र में एक अलग ही पहचान दिलाई क्योंकि लोगों का यह मानना था कि लता जी की आवाज बहुत पतली है और यह पार्श्वगायिका बनने के लायक नहीं है तब लता जी के गुरू गुलाम हैदर ने यह बात साबित करने का बीड़ा उठाया कि भविष्य में लता जी एक सफल और प्रसिद्ध पार्श्वगायिका बनेंगी और यह बात सिद्ध हो गयी।

उस्ताद गुलाम हैदर ने कई निर्माता-निर्देशको से लता जी की मुलाकात करवाई लेकिन इसके बावजूद सफलता उनके हाथ नहीं लग पाई। तभी 1948 में गुलाम हैदर साहब ने एक फिल्म "मजबूर" में एक गाना गवाया जो कि "दिल मेरा तोड़ा" था। यह गाना लता जी की जिन्दगी का पहला हिट गाना था और इस प्रकार गुलाम हैदर साहब जी लता जी के **गॉड फादर** माने गये। इसके बाद 1949 फिल्म "महल" में एक गाना **"आयेगा आने वाला"** गाया जो कि सुपर डुपर हिट हुआ। इस गाने के बाद लता जी ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। यह गाना आज भी लोगों की जुबान पर सुना जाता है।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथः क्वचित् "

निराशा को न होने दें हावी

निराशा एक महाव्याधि है, जो व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियों एवं संभावनाओं को कुंद करके रख देती है। इसीलिए निराशा को शास्त्रों में पाप बताया गया है। जिससे स्वयं को आनंद न मिले, औरों को भी कुछ प्रसन्नता न मिले, उस निराशा को अधिक देर तक पालने में क्या समझदारी ? जबकि उत्साह जीवन की संजीवनी है। वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि उत्साह में बड़ा बल होता है, उत्साह से बढ़कर अन्य कोई बल नहीं है। उत्साही व्यक्ति के लिए संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है।

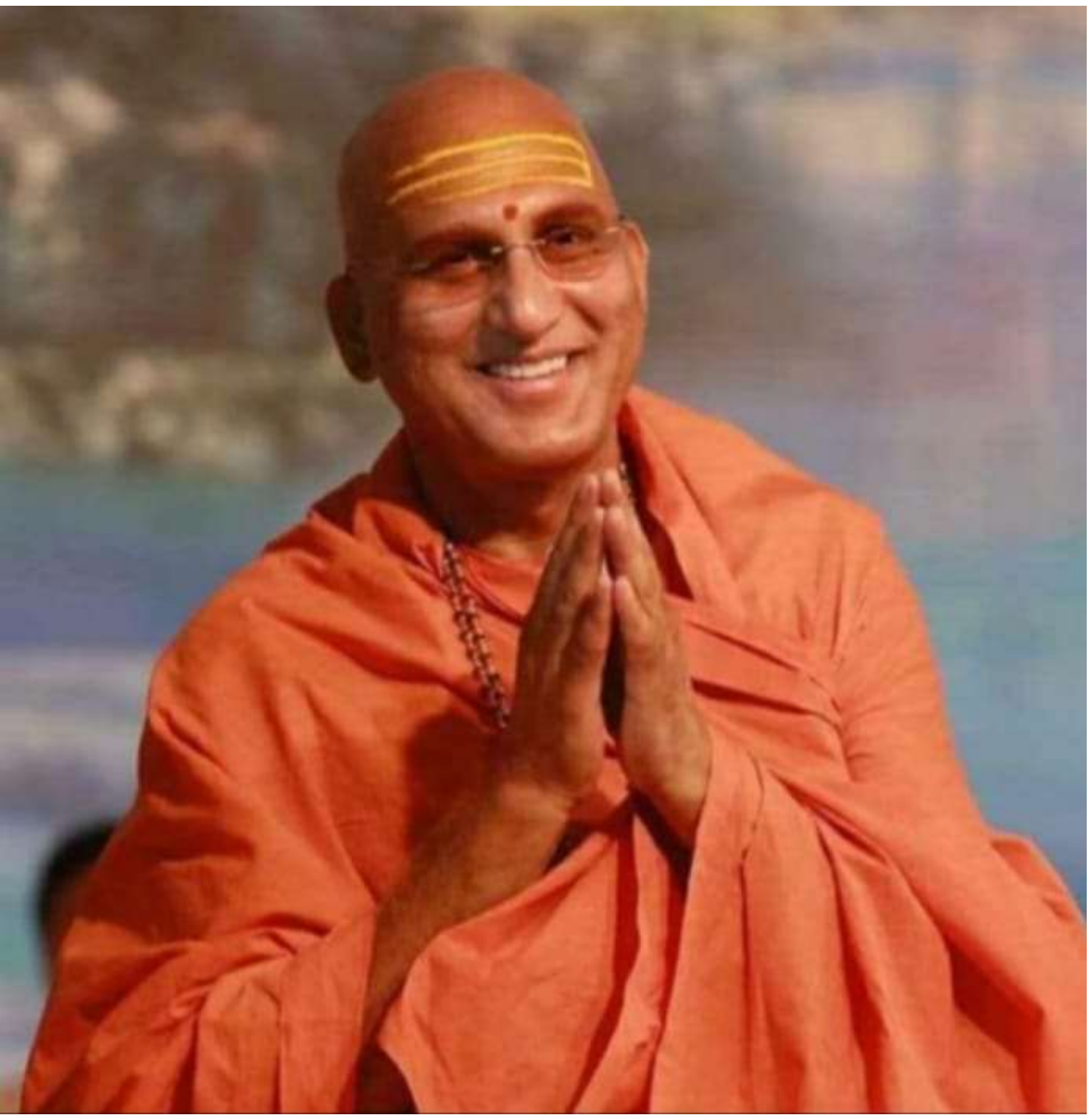

आशा जहाँ जीवन में संजीवनी शक्ति का संचार करती है तो वहीं निराशा व्यक्ति को मृत्यु की ओर ले जाती हैं, क्योंकि निराश व्यक्ति जीवन से उदासीन और विरक्त होने लगता है। जीते जी जैसे जीवन मृतप्राय-सा हो जाता है उसे अपने चारों ओर अंधकार फैला हुआ दिखता है और व्यक्ति मानसिक शिथिलता की अवस्था में आ जाता है। इस तरह उत्साह के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। उत्साहहीन के लिए सब कुछ कठिन हो जाता है।

जीवन से निराश व्यक्ति अपने कर्त्तव्य के प्रति भी उदासीन हो जाता है और इसके प्रति अनिच्छा व हीनता की भावना लिए होता है, परिणामस्वरूप उसके जीवन में किसी तरह की भव्यता और संपन्नता की आशा नहीं की जा सकती। उसके आश्रय में पल रहे स्वजन भी अविकसित ही रह जाते हैं। इस तरह उत्साहहीनता एक तरह का अपराध ही कही जाएगी। इस मनःस्थिति से जितना जल्दी उबरा जो सके, उतना बेहतर रहता है। यह कार्य निराशा के कारणों को समझते हुए संपन्न किया जा सकता है।

निराशाभरी मनःस्थिति के कई कारण हो सकते हैं। यह शरीर में किसी रोग या विकार के कारण पनप सकती है। पेट में अपच, कब्ज, गंदी वायु, अत्यधिक श्रम एवं भाग-दौड़, विश्राम, नींद का अभाव, थकान के कारण भी निराशा व उदासीनता पैदा हो जाती है। हालाँकि इस तरह की निराशा से उबरना अधिक कठिन नहीं होता। जीवनशैली में आवश्यक सुधार, संतुलित जीवनचर्या एवं प्राकृतिक नियमों के पालन के साथ व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ करते हुए ऐसी मनोदशा से उबर जाता है।

निराशा का एक बड़ा कारण रहता है अपनों से बढ़ी चढ़ी अपेक्षाएँ करना और जीवन के यथार्थ को स्वीकार नहीं कर पाना। जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही सारा संसार सोचने लगे या हमारी हर बात मानने लगे या सब कुछ हमारे अनुकूल हो चले-ऐसी बचकानी एवं अतिवादी सोच निराशा का कारण बनती है। इस परिवर्तनशील एवं वैविध्यपूर्ण संसार में सब कुछ हमारे हिसाब से हो व यथावत् बना रहे, ऐसी कामना का पूर्ण होना कैसे संभव है ?

स्वामी श्री अवधेशानन्द गिरि

लाभ-हानि, संयोग-वियोग, बुढ़ापा, मृत्यु के क्षण इस जीवन के यथार्थ हैं, इनको स्वीकार करने से मन अनावश्यक निराशा और विषाद से मुक्त हो जाता है। इस यथार्थता को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी नहीं। इस आधार पर परिवर्तन के शाश्वत विधान की लय में जीवन को समायोजित करना एक बड़ा कौशल माना जा सकता है।

वर्तमान को छोड़कर भूत एवं भविष्य में अत्यधिक विचरण भी निराशा का कारण बनता है। कुछ लोग पूर्व में हुए हानि, अपमान, पीड़ा और गलतियों आदि के कारण क्षुब्ध रहते हैं। कुछ भविष्य के खतरों व अनहोनी की भयावह कल्पनाएँ कर अवसादग्रस्त हो जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ वांछित नहीं। भूतकाल में विचरण तथा इसके प्रति ग्लानि- ॐ पश्चात्ताप में निराश-हताश रहना गड़े मुरदे उखाड़ने जैसा है, जिससे कुछ सार्थक हाथ लगता नहीं। इसी तरह भविष्य की उधेड़बुन में चिंतित रहना भी उचित नहीं। इनमें से अधिकांश बातें तो घटित ही नहीं होतीं। इसके बजाय पुरानी गलतियों से सबक लेकर, उज्ज्वल भविष्य के संकल्प के साथ वर्तमान में पुरुषार्थ करते रहें तो ऐसे में भूत के विषाद तथा भविष्य की चिंता से उपजी निराशा से छुटकारा पाया जा सकता है।

निराशा का दृष्टिकोण से भी सीधा संबंध रहता है। जैसी सोच व भावनाएँ होंगी, वैसी ही प्रेरणाएँ भी उभरती रहती हैं। यदि दृष्टिकोण एवं भावनाएँ स्वार्थप्रधान हैं और हमें अपने ही लाभ का चिंतन अधिक रहता है, तो ऐसे में असंतोष, अवसाद और निराशा का हावी होना तय है। इसके विपरीत जितना हम परमार्थपरायण सोच रखते हैं, जनकल्याण 5 का भाव रखते हैं, उतना ही जीवन आशा, उत्साह और प्रसन्नता से भरा होगा।

इस तरह स्वार्थ से परमार्थ की ओर जीवन का पलड़ा पलटते ही निराशा का अँधेरा छँटने लगता है और आशा का नवसंचार होता है। किसी बँधे-बँधाए ढर्रे पर चलते रहने से उपजी ऊब भी निराशा का कारण बनती है। इस अवस्था से उबरने के लिए जीवन में विविधता का होना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। कला, संगीत, साहित्य, खेल, मनोरंजन, लोकसंपर्क, यात्रा, तीर्थाटन, धार्मिक कृत्य आदि जीवन के अनेक पहलुओं को अपनी रुचि के अनुरूप दैनिक जीवनक्रम में स्थान देने से उत्साह के कई आधार तैयार किए जा सकते हैं।

बहुत अधिक सोचते रहने से भी निराशा पनपती है। एक तो ऐसे में कोई ठोस व्यावहारिक कदम नहीं उठ पाता तथा जीवन विफलताओं से भरा रहता है और ऐसे में भूलवश कोई बुराई या गलत कर्म हो गया तो वह मामूली कुकर्म भी भारी अपराध जान पड़ता है। ऐसे में हीनता की भावना पैदा होती है, निराशा घर कर जाती है और मन अवसाद से ग्रसित हो जाता है। इस तरह कुढ़न के समाधान के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि मन को लक्ष्य में व्यस्त रखें और बहुत अधिक सोच-विचार न करें। जीवन को एक खेल समझकर जिएँ, इस जीवनरूपी रंगमंच के नाटक में कुशल पात्र की भाँति अपनी भूमिका अदा करें। यदि राह में कोई गलती हो जाए तो उसे अधिक गंभीरता से न लें, बल्कि इनसे सीख लेकर आगे बढ़ें।

फिर जीवन सुबह और शाम, रात और दिन जैसे दोनों पक्षों के साथ मिलकर बनता है। इनके प्रति सम्यक दृष्टि हलके-फुलके जीवन का आधार बनती है। इसलिए केवल अँधेरे पर ही ध्यान केंद्रित न करें, सकारात्मक पक्ष पर भी विचार करें। जीवन के घनघोर अंधकार के बीच उज्ज्वल संभावनाओं के बीज अवश्य मिलेंगे। इनको अपने पुरुषार्थ एवं सतत प्रयास का खाद-पानी देते रहें। ये समय पर पुष्पित पल्लिवत होकर अवश्य ही जीवन की बगिया को महकाएँगे। इस तरह ईश्वरीय विधान पर अटल आस्था के साथ अपनी संभावनाओं पर सतत कार्य किसी भी तरह की निराशा से उबरने का एक सुनिश्चित राजमार्ग साबित होता है।

अखण्ड ज्योति - से साभार

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

मेरी जन्म भूमि- लक्ष्मणगढ़ – श्री रामचन्द्र जाजोदिया

मुझे गर्व है, मैं सिर झुकाकर इस धरती को प्रणाम करता हूँ, जहाँ पर मेरा जन्म चैत्र शुक्ला नवमी(राम नवमी) सन् 1945 को हुआ। जन्म की पैदा इशी से सबने कहा कि यह अपना नाम लेकर ही दुनिया में आया हैं इसलिये मेरा नाम घरवालों ने रामचंद्र रक्खा ।

लक्ष्मणगढ़ की पवित्र भूमि जिस पर दान दाताओं, विद्वान् – शूर वीरों, देश भक्तों, देश प्रेमियों, साधू संतों का जन्म हुआ। दान वीरों की श्रेणी में यह नगर सबसे हर काम में अग्रणी रहा है।

सेठ सूरजमल झुंझुनूवाला, सेठ लच्छीराम चूड़ीवाला, सेठ हरिराम जाजोदिया, राठी परिवार, सोढानी परिवार, श्री द्वारकाप्रसाद बगड़िया, सेठ भगवान दास गनेड़ीवाला, श्री भगवान दास तोदी, सांगानेरिया परिवार, पण्डित श्री चिरंजीलाल मिश्र व अन्य सभी दान दाताओं व विद्वत् जनों का नाम आदर से आज भी लिया जाता है।

लक्ष्मणगढ़ की बसावट राव राजा श्री लक्ष्मण सिंह जी ने वि.स.1864 में की थी व इसका नाम अपने ही नाम पर लक्ष्मणगढ़ रक्खा।

आस – पास के गावों से परिवारों को श्री राव राजा ने बुलाया था और उनके सर नाम भी उन्हीं के गाँव के नाम पर प्रसिद्ध हो गये। हम लोगों को जाजोद गाँव से लाये इस लिये जाजोदिया कहलाये, गनेड़ी से आये वो गनेड़ीवाला, खुड़ी से आये वो खुड़ीवाले, बगड़ी से आये वे बगड़िया, खीरवा से आये वे खीरवेवाला, चिराणा से आये वे चिराणिया, भूमा से आये वो भूमावाला इसी प्रकार सबके सर नाम प्रसिद्ध हुये।

लक्ष्मणगढ़ की बसावट – मैन हाइवे के न. 52 के पूर्व में है। रास्ते अति सुन्दर, चौड़े, मकानात देखने लायक, रेलवे का साधन एवं सड़कों का साधन पूरा है।

राव राजा श्री लक्ष्मणसिंह ने पहाड़ी पर जो दुर्ग बनवाया, वह अति सुन्दर व राजस्थान के अन्य दुर्गों से विलक्षण है। रामायण सीरियल में श्री रामानन्द सागर को भी यह दुर्ग अति प्रिय है इसीलिये उन्होंने अपने रामायण सीरियल में पुष्कर विमान के साथ इस दुर्ग को दो – तीन बार दर्शाया है।

यहाँ के दान दाताओं ने प्रायः अपना नाम न दर्शा कर यहाँ के इष्टदेव श्री रघुनाथ जी महाराज के नाम से ही संस्थाओं का नाम रक्खा, श्री रघुनाथ विद्यालय, श्री रघुनाथ बालिका विद्यालय, श्री रघुनाथ हॉस्पिटल, श्री रघुनाथ आयुर्वेदिक औषधालय आदि।

लक्ष्मणगढ़ के मंदिरों में श्री रघुनाथ जी का बड़ा मन्दिर, श्री विदावत जी का मन्दिर, श्री न्यामा मन्दिर, श्री मुरली मनोहर जी का मन्दिर, सीताराम जी का मन्दिर, कृष्ण वाटिका आदि सभी दर्शनीय हैं।

यहाँ के लोग सभी के सुख – दुःख में बिना बुलावे ही आकर हर काम में परिवार की तरह ही भागीदारी निभाते हैं जो इस नगर की विशेषता है।मेरे पूज्य प्रातः स्मरणीय दादा श्री श्री हरिराम जाजोदिया गाँव के पंचों में से थे। श्री रघुनाथ जी के मन्दिर का वर्तमान स्वरुप उन्हीं के द्वारा जनता के सहयोग के जीर्णोद्धार से करवाया गया है। श्री भूतनाथ मन्दिर व मोक्ष धाम की चार दिवारी भी उन्हीं की सूज बूझ की देन है। इस कार्य में श्री शंकर लाल काबरा का नाम अत्यंत उलेखनीय है।

नगर में सनातन धर्म युवक मण्डल की स्थापना श्री पं. रामेश्वर जोशी आत्मज श्री पं. घनश्याम चन्द्र ने की थी और जिसको स्थापना के बाद से दानवीर सेठ लच्छीराम चूड़ीवाला का वरद संरक्षण इसको मिला। किसी भी नागरिक अथवा ग्रामीण को अंतिम संस्कार में कोई भी असुविधा न हो इसका ध्यान रखते हुए सभी साधन निशुल्क उपलब्ध हैं, परन्तु कोई भी इसका उपयोग निशुल्क न करकर प्रायः लागत का पैसा चुका देता है।

लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) नागरिक विकास समिति जयपुर में हैं, जिसका मैं भी सदस्य हूँ। एक वार्षिक सभा में एक बहिन ने अपने भाषण में "लक्ष्मणगढ़िया सबसे बढ़िया" का नारा दिया था। उसके बाद जितने भी वक्ता आये उनके भाषण की शुरुआत व अंत "लक्ष्मणगढ़िया सबसे बढ़िया" से ही हुई।

लक्ष्मणगढ़ के वासी अपने रोजगार के लिये यहाँ से बाहर गये व पूरे हिन्दुस्तान के शहरों में अपने गाँव का नाम रोशन किया। आज आप हिन्दुस्तान के किसी भी शहर में चले जायें वहाँ लक्ष्मणगढ़ का आदमी जरुर मिल जायेगा। आप विदेश में भी जायें तो प्रायः हर देश में यहाँ का आदमी आपको मिल जायेगा।

व्यापार व व्यवसाय की दृष्टि से भी यहाँ के लोग काफी मेहनती हैं व अपनी मेहनत से ही आज देश के व्यापार में अपना नाम रोशन कर रक्खा है।

कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार है- श्री तोलाराम चूड़ीवाला, श्री नथमल तोदी, श्री रामगोपाल दुजोदवाला, श्री सूरजमल जालान, झुन्झुनू वाला परिवार, काबरा परिवार, लाखोटिया परिवार, डोनियार सूटिंग वाले जाजोदिया परिवार व अन्य कई जिनका आधुनिक शेयर बाजार में भी बड़ा हाथ है।

हमने हमारे पूर्वजों की हवेली जो करीबन 200 वर्ष पुरानी है, उसका पुनर्निमाण कराकर आधुनिक रूप देकर वालानुकुलित कमरे व अटेच लेटरिन बाथरूम बनवाकर जाजोदिया गेस्ट हाउस के नाम से यहाँ की जनता की सुविधा के लिये बनवा दी है।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा की आने वाली पीढ़ियों का अपने गाँव व अपनी मिट्टी से प्रेम व लगाव रहना चाहिये, जिसकी जड़े अपनी मिट्टी से लगी हुई है, उसको कितनी भी दुविधाएँ आयें - आंधी, वर्षा, भूकम्प आये उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

मोंटेसरी शिक्षा की विशेषता

बगड़िया बाल विद्या निकेतन की "मोंटेसरी" लक्ष्मणगढ़

शिक्षा की 'मोंटेसरी पद्धति' छोटे बच्चों के लिये 'शिक्षा' की एक प्रणाली है जो बच्चों की प्राकृतिक रुचियों और गतिविधियों को विकसित करती है | यह बच्चों की स्वतंत्रता पर जोर देता है | यह स्वाभाविक रूप से तैयार सीखने के माहौल में सीखने की शुरुआत करती है |

"B.B.V.N. मोंटेसरी" में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये सम्पूर्ण प्राकृतिक वातावरण को तैयार कर बच्चों को निर्बाध रूप से सीखने के लिये स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण दिया गया है |

- एक गतिविधि कक्ष तैयार किया गया है जहाँ बालक खेल – खेल में स्वतंत्रतापूर्वक सीखता है |
- सुव्यवस्थित कक्षा – कक्ष तैयार किये गए हैं |
- प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ नियुक्त की गयी हैं |
- विद्यार्थियों के लिये खेल के मैदान हैं |
- बालकों के लिये खेल की सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध है |
- बालकों को अच्छे विचार और अनुशासित रहना सिखाया जाता है |
- मोंटेसरी में सभी विषयों को चित्रों और गतिविधियों के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया जाता है |
- नृत्य, संगीत व कला की कक्षाओं में विद्यार्थियों को रूचि के अनुसार सीखने का प्राकृतिक वातावरण तैयार किया गया है |
- समय – समय पर खेल प्रतियोगिताएँ, नृत्य,संगीत, चित्रकला एवं कला की अनेक गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएँ बाल विकास के लिये आयोजित की जाती है | लेख, भाषण व वाद – विवाद गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती है |

सामूहिक चित्रकारी

गुलाल लगाने की तैयारी

प्रदर्शित चित्र

ख़ुशी के पल

माखन चोर

भाषण देते हुए

वृक्षारोपण

सचिव मो. न. 9414037309, 9829408777

श्री ऋषिकुल – मोंटेसरी स्कूल –

बालकों के सर्वांगीण विकास के लिये
- नगर का एक अनुपम शिक्षण संस्थान

विशेषतायें – पूर्व प्राईमर प्रि – स्कूल – सहित-संगीत कक्ष, स्मार्ट क्लास, स्पोकन इंग्लिश, कंप्यूटर क्लासेज, बाल पुस्तकालय, बाल पूल, स्विमिंग पूल, मनोरंजन कक्ष बालकों को लाने ले जाने के लिये वाहन व्यवस्था, अबेकस मेथ्स

अध्यक्ष
श्री विकास चूड़ीवाला

श्री ऋषिकुल – मोंटेसरी स्कूल –लक्ष्मणगढ़
– के केन्द्र में अवस्थित-
- प्रवेश चालू है –

RISHIKUL – MONTESSORI SALIENT FEATURES-
A Home-Away From Home With Personal Care
Quality Education With Experienced Teaching Staff
A Large Play Ground With Garden + Swing +
Merry Go Round + Slide
Extra Class For Every Subject
Teacher Student Ratio 1:15
Teaching With Smart Class
Teaching Ball Pool Indoor Swimming Pool
Kids Resting Room
Movements Of Kids Monitored Through CCTV Camera
Kids Music Band
Regular Medical Check-Up Of Students Done By Doctors
Transport System With Vehicle Tracking System

सचिव
श्रीमती संगीता चूड़ीवाला

आपके छोटे नौनिहाल के लिये आँचल जहाँ उसे पारिवारिक माहौल में खेलकूद के साथ शारीरिक एवं मानसिक विकास देने के उद्देश्य के साथ आरम्भ की गयी ऋषिकुल मोंटेसरी विद्यापीठ की ही एक इकाई है | नगर के मध्य स्थित यह संस्था आपके बच्चों के सर्वांगिण विकास के लिये करीब 2 दशाब्दी पूर्व संकल्पबद्ध है | कहीं और प्रवेश कराने से पूर्व एक बार ऋषिकुल मोंटेसरी में अवश्य पधारें |

सुमन शर्मा
(प्रिंसिपल)

संजना शर्मा
मोंटेसरी (H.M)

डॉ. रेखा शर्मा
(Administrater)

Website : www.rishikul.edu.in

Email : rishikul.laxmangarh@gmail.com

Contact No. 01573-222293,222295 (M) 9610464351

ADDRESS : RAMLILA MAIDAN, LAXMANGARH - SIKAR (RAJASTHAN

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी

शेखावाटी सन्मार्ग को **online** पढ़ने के लिये **www.srrividya.com** वेब साईट विजिटकरें|